जिह्वा-प्रांगण में नाचा करते हैं। जब वह श्रीकृष्ण को भोग अर्पण करता है तो श्रीकृष्ण प्रत्यक्ष रूप से उस नैवेद्य को खाते हैं और उनके प्रसाद को खाकर भक्त भी कृष्णमय बन जाता है। जो इस सेवा के परायण नहीं है वह इसके मर्म को नहीं जान सकता, यद्यपि गीता तथा अन्य वैदिक शास्त्रों में भक्तिपथ का प्रतिपादन है।

अथ चित्तं समाधातुं न शक्नोषि मयि स्थिरम्।
अभ्यासयोगेन ततो मामिच्छाप्तुं धनंजय।।९।।

अथ=यदि; **चित्तम्**=मन को; **समाधातुम्**=एकाग्र करने में; **न शक्नोषि**=समर्थ नहीं है; **मयि**=मुझ में; **स्थिरम्**=अचल; **अभ्यास**=अभ्यासरूपी; **योगेन**=भक्तियोग के द्वारा; **ततः**=तो; **माम्**=मुझ को; **इच्छ**=इच्छा कर; **आप्तुम्**=प्राप्त होने की; **धनंजय**=हे अर्जुन।

अनुवाद

हे अर्जुन ! यदि तू मन को मुझ में अचल रूप से एकाग्र नहीं कर सकता, तो भक्तियोग की विधि का अभ्यास कर। इससे तुझ में मेरी प्राप्ति की इच्छा जागृत हो जायगी।।९।।

तात्पर्य

इस श्लोक में भक्तियोग की दो पद्धतियों का प्रतिपादन है। प्रथम पद्धति में उस का अधिकार है, जो दिव्य प्रेमवश भगवान् श्रीकृष्ण में अनुरक्त हो गया हो। दूसरी विधि उसके लिये है, जिसमें श्रीभगवान् के प्रति प्रेममयी आसक्ति का समुदय नहीं हुआ है। इस दूसरे वर्ग के लिये नाना प्रकार के विधि-विधान हैं, जिनका पालन करने से अन्ततः श्रीकृष्ण में अनुराग की अवस्था प्राप्त हो जाती है।

भक्तियोग इन्द्रियों को शुद्ध करने की पद्धति है। इस जगत् में अपनी तृप्ति में लगी रहने से इन्द्रियाँ नित्य अशुद्ध (दूषित) रहती हैं; परन्तु भक्तियोग के अभ्यास से इन्हें शुद्ध किया जा सकता है। उस शुद्धावस्था में इन्हें साक्षात् श्रीभगवान् का संस्पर्श प्राप्त होता है। इस संसार में जीवमात्र किसी न किसी स्वामी की सेवा में संलग्न है, परन्तु उसकी वह सेवा प्रेममयी नहीं है। वह धन कमाने के लिये ही किसी की सेवा करता है और उसका स्वामी भी उससे प्रेम नहीं करता; उसकी सेवा के बदले में ही वह कुछ पारिश्रमिक देता है। अतएव संसार में प्रेम का प्रश्न नहीं बनता। परन्तु भगवत्परायण जीवन के लिये शुद्ध प्रेमावस्था की प्राप्ति आवश्यक है। इन्हीं इन्द्रियों के द्वारा भक्तियोग का अभ्यास करने से यह प्रेमावस्था सुलभ हो सकती है।

यह भगवत्प्रेम जीवमात्र के हृदय में सोया पड़ा है। संसार में यह नाना प्रकार से अभिव्यंजित तो होता है; पर विषयसंगवश इसका यह प्रकाश दूषित है। अतएव विषयसंग को शुद्ध करके उस सुप्त स्वाभाविक कृष्णप्रेम को फिर जागृत करना है। यही भक्तियोग की सम्पूर्ण पद्धति है।

भक्तियोग के विधि-विधान के पालनार्थ कुशल सद्गुरु के आश्रय में कुछ सिद्धान्तों का अनुसरण करना आवश्यक है। ब्राह्ममुहूर्त में शय्या त्याग कर स्नान,